संयम स्वर्ण महोत्सव

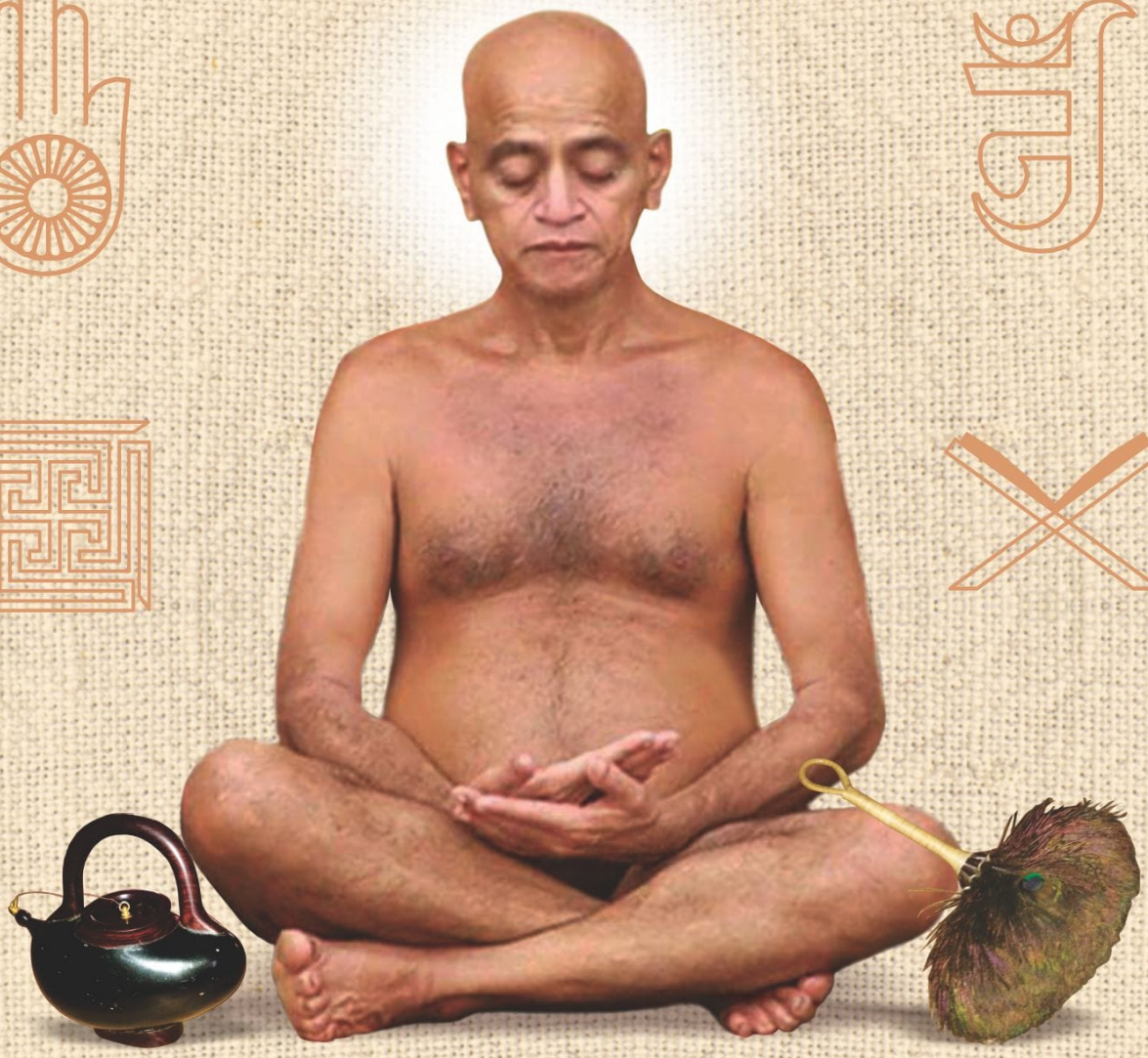

महा-मनीषी

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

अद्भुत क्षण

शताब्दी के अत्यंत आदरणीय एवं श्रेष्ठतम संतशिरोमणि आचार्य भगवन् श्री 108 विद्यासागरजी महाराज का साक्षात्कार सान्निध्य इस युग के प्राणियों के लिए एक दुर्लभ उपलब्धि है। यही कारण है कि सहज ही इसे 'संतशिरोमणि युग' कहा जाने लगा। ज्ञान, वैराग्य और आचरण के त्रिवेणी के भगीरथ विद्यासागरजी महाराज ने जग को सब कुछ दिया है, लगातार दे रहे हैं। सोचने की बात यह है कि श्रावक उन्हें क्या दे पाए? इसके लिए सामर्थ्य के साथ, संकल्प और भावना की आवश्यकता है। वैसे ही जैसे गिलहरी ने सागर सेतु निर्माण के दौरान रेती के कणों को यहाँ से वहाँ पहुँचाकर दिया था। ऐसा ही पुण्य एवं सातिशय प्रसंग आपकी झोली में भी आ सकता है। आचार्यश्री के असीम आशीर्वाद के रूप में आप सब कुछ पा सकते हैं, उनके श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित कर धन्यता महसूस कर सकते हैं।

आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. 2074 यानि 28 जून 2017 ही वह पावन दिन है जो पूज्य गुरुदेव का 50वाँ दीक्षा दिवस है और इस दिन संपूर्ण विश्व में संयम स्वर्ण महोत्सव मनाने की भव्य तैयारियाँ जारी हैं। यह संयम स्वर्ण महोत्सव हमारे जीवन के लिए भी मणिकांचन योग बनकर आ रहा है। मानव जीवन में ऐसे अवसर बिरले ही होते हैं जब हमें महान संतों के जीवन के उत्सवों की साक्षी मिलती है। आइये गुरुदेव के विशिष्ट दीक्षा दिवस को अविस्मरणीय बनाएँ और अपने जीवन को धन्य करें।

ज्ञान दान का अपूर्व अवसर

गुरुवर्य के स्वर्ण दीक्षा प्रसंग पर आचार्यश्री द्वारा रचित संपूर्ण साहित्य एवं प्राचीन आचार्यों द्वारा रचित महत्वपूर्ण ग्रंथों को प्रकाशित करने का मानस बना है। यह ग्रंथ सैट मात्र रु.11000/- की न्यौछावर राशि देकर किसी भी मंदिर, पुस्तकालय, मुनि संघ, विद्यालय को भेंटकर कौण्डेश ग्वाले की तरह आचार्य कुंदकुंद बनने का स्वर्णिम अवसर भी हमें प्राप्त होने जा रहा है। आप इन ग्रंथों को अपने घर में सहेज सकते हैं। महोत्सव के प्रथम चरण में 50 एवं शेष समापन बेला में प्रकाशित करने की भावभूमि बनी है।

- कुन्दकुन्द भारती
- प्रवचनसार
- समयसार
- नियमसार
- पंचास्तिकाय
- अष्टपाहुड
- पूज्यपाद भारती
- समन्तभद्र भारती
- प्रमेय रत्नमाला
- परीक्षामुख
- न्यायदीपिका
- सम्यक्त्व कौमुदी
- गद्यचिन्तामणि
- आराधना कथाकोश
- जिनदत्त चरित्र
- पाण्डव पुराण
- श्रेणिक चरित्र
- त्रिकालवर्ती महापुरुष
- कर्म प्रकृति
- जिनसहस्रनाम
- योगसार प्राभृत
- रत्नकरण्डक श्रावकाचार
- आराधनासार
- पद्मनंदि पंचविंशतिका
- मूलाचार प्रदीप
- बृहद् द्रव्यसंग्रह
- ग्रन्थ परीक्षा
- कल्याणकारकम्
- नीतिवाक्यामृत
- सिद्धान्तसार दीपक
- आत्मानुशासन
- सत्यशासन परीक्षा
- नाममाला
- युक्त्यनुशासन
- रत्नत्रय चंद्रिका
- तत्त्वार्थवृत्ति
- तत्त्वार्थसूत्र
- सुभाषितार्णव
- अभिनव प्राकृत व्याकरण
- आलापपद्धति
- जिनेन्द्र संस्तुति
- सुकुमाल चरित्र
- श्रुताराधना संगोष्ठी
- विद्या वाणी भाग-1
- विद्या वाणी भाग-2
- विद्या वाणी भाग-3
- विद्या वाणी भाग-4
- जिन विद्यानुवाक्
- पंचशती
- दिव्य वाणी
- काव्य पारिजात

उपरोक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त डॉ. ज्योति प्रसाद जैन, डॉ. ए.एन. उपाध्ये, बाबू कामताप्रसादजी बैरिस्टर चम्पतरायजी, पं. कैलाशचन्द्रजी सिद्धांत शास्त्री एवं डॉ. जगदीशचन्द्र जैन जैसे प्रसिद्ध विद्वानों के साहित्य भी उपलब्ध होंगे ।

अहिंसा धर्म के सद्भाव में सब धर्म अपने आप पल जाते हैं।

आचार्य विद्यासागर पत्राचार पाठ्यक्रम

सन् 2017–18 में गुरुदेव के दीक्षा प्रसंग पर आयोजित होने वाले विभिन्न आध्यात्मिक एवं रचनात्मक अनुष्ठानों के अतिरिक्त एक विशिष्ट पत्राचार पाठ्यक्रम की शुरूआत की जा रही है। एक वर्ष का यह पाठ्यक्रम गुरुवर्य के अलौकिक व्यक्तित्व एवं लोक कल्याणकारी विचारों पर एकाग्र होगा। इसके अंतर्गत आप अपने समय के श्रेष्ठतम संत एवं उनकी विचार वारिधि के साक्षी होंगे। तीन वर्गों में विभाजित इस पाठ्यक्रम की प्रावीण्य सूची में सम्मिलित होने वाले श्रावकों को आकर्षक पुरस्कार राशि से अलंकृत किया जाएगा।

सम्यग्दर्शन

आयुवर्ग : 10 से 13 वर्ष

1. दयोदय पुरस्कार	31000/–
2. जयोदय पुरस्कार	21000/–
3. वीरोदय पुरस्कार	11000/–

आयुवर्ग : 14 से 17 वर्ष

1. सिद्धोदय पुरस्कार	51000/–
2. भाग्योदय पुरस्कार	41000/–
3. सर्वोदय पुरस्कार	31000/–

सम्यग्ज्ञान

सम्यक्चारित्र

आयुवर्ग : 18 वर्ष से ऊपर

1. शांतिसागर पुरस्कार	100000/–
2. ज्ञानसागर पुरस्कार	71000/–
3. विद्यासागर पुरस्कार	51000/–

उपरोक्त पुरस्कार राशियों के अतिरिक्त

प्रांतीय स्तर पर 11 सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये जाएँगे।

विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय नहीं है।

स्वावलंबन महायोजना

कई परिवार अर्थाभाव के कारण श्रेष्ठ शिक्षा, उपयुक्त चिकित्सा एवं जीवन यापन के संसाधनों से वंचित रहते हैं। उनके जीवन और परिजनों को आर्थिक सुरक्षा देने के लिए एक बहुआयामी स्वावलंबन योजना बनाई गई है। इसके अंतर्गत एक–एक परिवार को गोद लेकर उन्हें शिक्षा, चिकित्सा एवं पारिवारिक सुरक्षा उपलब्ध करवाने का मानस बनाया गया है। इस स्वावलंबन प्रकल्प के अंतर्गत गौपालन, पूरी मैत्री एवं हथकरघा–ग्रामोद्योग परिकल्पों के द्वारा आत्मनिर्भर बनाने की योजना है।

पाक्षिक पत्रिका

प्राच्य संस्कृति की भाँति वर्तमान युग का ब्यौरा भी स्वर्णिम अक्षरों में लिखने का विचार बना है। कोशिश यह होगी कि यह ऐसा दस्तावेज़ बने जो भावी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के इतिहास में स्वर्ण युग की ख्याति से साक्षात्कार करवाए। इस युग का नाम होगा संतशिरोमणि विद्यासागर स्वर्ण युग। यदि आप इस स्वर्णिम भावधारा के प्रत्यक्षदर्शी होना चाहते हैं तो इसका पारायण अवश्य करें।

काव्य संग्रह

गुरुवर्य को समर्पित कोई काव्यात्मक शब्द शिल्प, गीत या छंद आपने संजोकर रखा हो तो हमें अवश्य भेजें। इसे आपके नाम उल्लेख के साथ प्रकाशित किया जाएगा। गुरु चरणों को समर्पित आपकी भावांजलि की हमें प्रतीक्षा है।

संयम कीर्ति स्तंभ

संयम के सुमेरू, वीतराग के पर्याय और मानव कल्याण के सारथी गुरुवर्य के उपकारों से उऋण होना असंभव है किंतु उनके उपकारों को अमरता तो निश्चित ही प्रदान की जा सकती है। हम–आप, सभी शासन, प्रशासन, निर्वाचित प्रतिनिधियों (सांसदों/विधायकों/पार्षदों) एवं सहृदय समाजजनों की मदद व सहभागिता से अपने ग्राम, नगर के सार्वजनिक स्थलों, चौराहों, यात्री प्रतीक्षालयों, बस स्टैंड, रेल्वे स्टेशन, विद्यालयों तथा पब्लिक पार्क में संयम कीर्ति स्तंभ की स्थापना करके गुरुवर्य के अवदान एवं व्यक्तित्व के प्रति अपनी भावपूर्ण आदरांजलि व्यक्त कर सकते हैं। ध्यान रहे इस कीर्ति स्तंभ को संयम स्वर्ण महोत्सव समिति द्वारा एक ही डिज़ाइन, एक ही आकार और एक ही रंग संयोजन में सजाया गया है। आपको सिर्फ़ संकल्प करना है एवं इसकी सूचना महोत्सव समिति को देना है।

कृतज्ञांजलि/ पूजांजलि

संगीत किसी भी शब्द को लोकप्रिय बनाने एवं श्रोता के मन को आनंद से भर देने में समर्थ होता है। इसी उद्देश्य से गुरुवर्य की स्तुतियों के संग्रह को प्रकाशित किया जाएगा। कृतज्ञता ज्ञापित करती कोई पूजांजलि या गुणगाथा आपने रची हो तो हमें तत्काल प्रेषित कीजिएगा, उसका प्रकाशन कर हमें प्रसन्नता होगी।

करें–कराएँ ज्ञानावरण कर्म की निर्जरा

विगत आधी सदी में आचार्यश्री के मुखारबिन्द से निःसृत अमृतवाणी अर्थात् प्रवचन, चर्चाएँ, प्रबोधन, कक्षाओं के उद्बोधन एवं चिंतन, सभी कुछ सहेजने और संजोने योग्य है। उनका एक–एक शब्द प्रकाशन योग्य है। यदि आपके पास उपर्युक्त में से जो भी सामग्री उपलब्ध हो हमें प्रेषित करें जिसे प्रकाशित कर जनसाधारण तक पहुँचाया जा सके।

संत शिरोमणि योग शिविर

संयम स्वर्ण महोत्सव के अंतर्गत आप अपने नगर/ग्राम में योग शिविर फ़िल्म शो, पुस्तक, चित्र प्रदर्शनी एवं विचार गोष्ठी का आयोजन कर सकते हैं। तीन दिन तक प्रमुख शहरों में योग शिविर की आयोजना है।

राष्ट्रीय भजन प्रतियोगिता

आचार्यश्री के जीवन एवं विचारों पर आधारित एक भजन प्रतियोगिता का आयोजन विभिन्न शहरों में किया जाएगा। यदि आप भक्ति संगीत गायन में अभिरूचि रखते हैं तो राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा की पहचान दर्ज़ कराने का यह स्वर्णिम अवसर है। इस प्रतियोगिता का अंतिम चरण दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया जाएगा।

विजेता को रु. 1,00,000/-
की पुरस्कार राशि भेंट की जाएगी।

निर्णायक होंगे देश के प्रख्यात भक्ति संगीत गायक
पद्मश्री अनूप जलोटा एवं पद्मश्री अनुराधा पौडवाल।

भजन संग्रहिका

यदि आपके पास गुरुवर्य को समर्पित भजनों, आल्हा गीतों, चालीसा और सूक्तियों (कोटेशन्स) आदि का लिखित संग्रह हो या आपने उन्हें रेकॉर्ड के रूप में संग्रहित कर रखा हो तो कृपया आप उन्हें हम तक पहुँचाने का कष्ट करें। दीक्षा प्रसंग के समय इन सारी सामग्री का संकलन एक महत्वपूर्ण कार्य होगा और आप इसमें सहभागी बन निश्चित ही पुण्यशाली महसूस करेंगे।

संचय करें - स्मृति प्रतीक

इस स्वर्णिम अवसर की स्मृतियों को संजोने हेतु गुरुवर्य की मुखमुद्रा सहित सुंदर स्वर्ण मुद्राओं का प्रकाशन किया जाएगा। यह सिक्के आप अपने परिवार की अगली पीढ़ी को हस्तांतरित कर सकें इस दृष्टि से इन्हें स्वर्ण, रजत एवं कांस्य धातुओं में अत्यंत आकर्षक स्वरूप प्रदान किया जा रहा है।

पाठशालाओं का पुनरुत्थान

प्रत्येक नगर में वर्तमान में लगने वाली पाठशालाओं को पुनर्जागृत कर बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करना हमारा प्रमुख ध्येय है ताकि समाज का नैतिक एवं चारित्रिक पक्ष मज़बूत हो, साथ ही अग्रिम समय में यही बच्चे सशक्त युवा पीढ़ी के रूप में उभरकर चतुर्विध संघ की विनय एवं वैय्यावृत्य में सहायक हों।

विशेष आकर्षण

अपने घर पर भारत के प्रख्यात कवियों के कंठ से निःसृजित एवं आचार्यश्री के जीवन पर एकाग्र अनमोल कविताओं की भावाभिव्यक्ति का संग्रह लाएँ एवं भक्ति रस का पान करें।

आचार्यश्री के बहुआयामी व्यक्तित्व से सुरभित एवं शुभाशीष से पल्लवित एप्प डाउनलोड करें तथा विज़िट करें हमारी वैबसाइट।

आचार्यश्री की जीवन यात्रा पर लैंडमार्क फ़िल्म प्रॉडक्शन मुंबई द्वारा निर्मित 90 मिनिट की डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म में गुरुवर्य के साक्षात् दर्शन कर आनंद प्राप्त करें।

आचार्यश्री पर केन्द्रित भजनों के एलबम को **आशा भोसले, कविता कृष्णमूर्ति, शान, शंकर महादेवन, सोनू निगम, श्रेया घोषाल** जैसे सुविख्यात गायकों ने अपने सुमधुर स्वरों से सजाया है। यह अद्वितीय संकलन शीघ्र ही आपके हाथों में होगा।

जहाँ पर धर्म है, सत्य है, न्याय है वहाँ पर रक्षा अपने आप होती है।

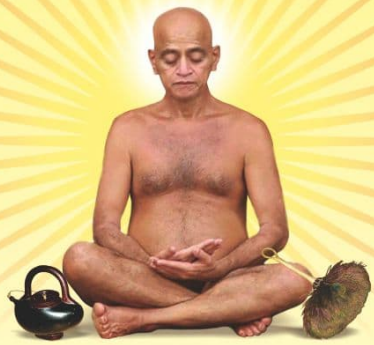

एक विशिष्ट तिथि :
आषाढ़ शुक्ल, पंचमी २८ जून २०१७

आचार्यश्री का दीक्षा महोत्सव हम सबके लिए जीवन का एक अनुपम पर्व बनकर उपस्थित होने जा रहा है। इस उत्सव में सहभाग न केवल मन के आनंद की अभिवृद्धि करेगा अपितु हम सबके मन में अपने समय के सर्वोच्च महा-मनीषी की आध्यात्मिक चेतना के साक्षात्कार का निमित्त भी बनेगा।

आपको विदित ही है कि दीक्षा का शुभ दिन 28 जून 2017 है। हम सबको इसे एक महापर्व के रूप में आयोजित करना है। हर घर में दीपों की माला का प्रज्ज्वलन, जैन ध्वज का आरोहण, अपने निवास एवं संस्थान पर आचार्यश्री के सुंदर चित्र का प्रदर्शन, प्रत्येक शहर में प्रभात फ़ेरी, चल समारोह का आयोजन, आचार्य छत्तीसी विधान, महाआरती, विद्वान ब्रह्मचारी भाई/बहन के प्रवचनों का आयोजन/मुनि संघ/आर्यिका का सान्निध्य तथा प्रभावना। सांस्कृतिक/भक्ति संगीत कार्यक्रमों का आयोजन आदि पूरे उल्लास और उत्साह के साथ किये जाने चाहिए। निवेदन यह भी है कि इन अनुष्ठानों का प्रचार-प्रसार स्थानीय मीडिया में अवश्य हो जिससे इस महापर्व को और अधिक विस्तार मिल सके।

आशा है आप पूरी ऊर्जा के साथ इस तिथि को अविस्मरणीय बनाने में जुट जाएँगे। ध्यान रहे आचार्यश्री की यह दीक्षा तिथि सृष्टि का एक अलौकिक क्षण बनकर हमारे जीवन में उपस्थित होने जा रही है। हम इसके साक्षी, सहभागी एवं अनुगामी बनें जिससे हमारे आध्यात्मिक चिंतन, दर्शन तथा आचरण को एक नई दृष्टि मिल सके।

ऐतिहासिक महाघोष की अंतर्यात्रा

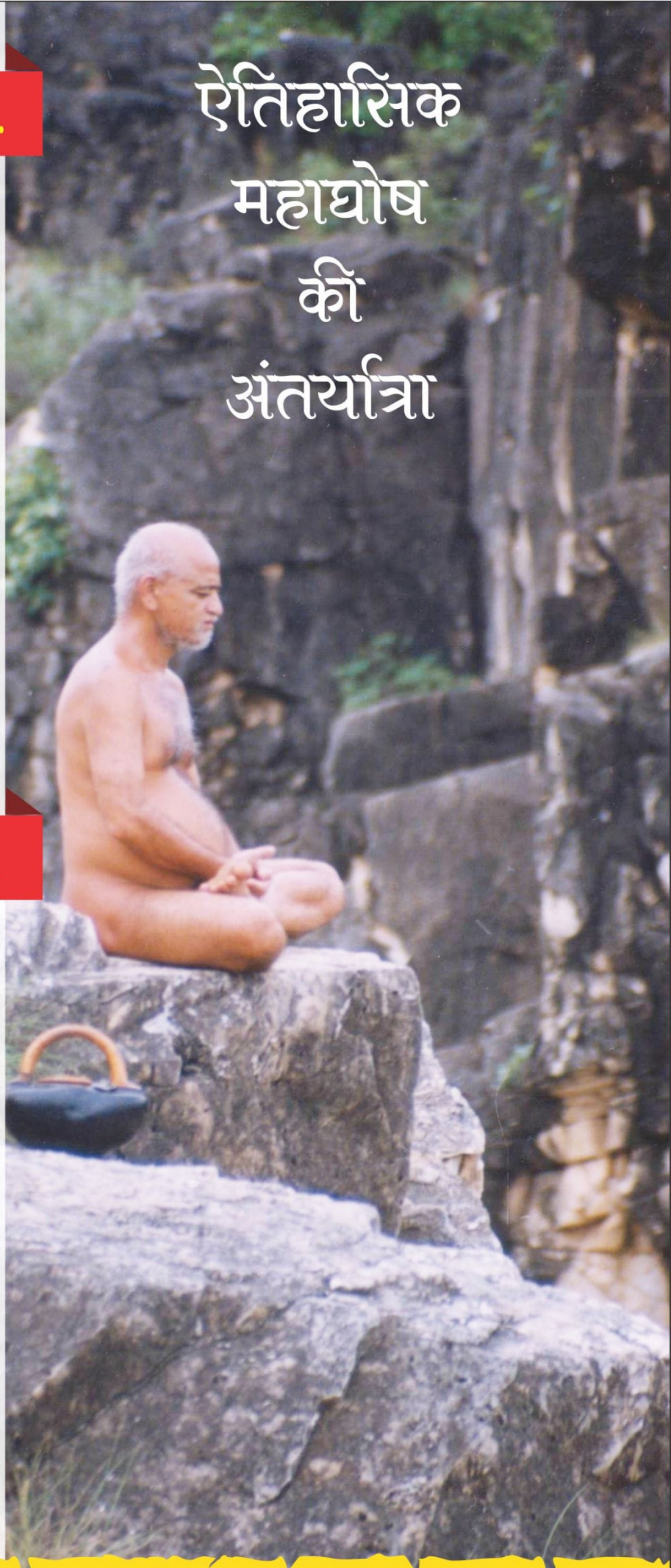

स्मृति के झरोखे से...

यह ग्रंथ गुरुवर्य से जुड़े संस्मरणों, स्मृतियों, अतिशयों का आश्चर्यजनक एवं अद्वितीय संकलन होगा जो यथाशीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है। इस ग्रंथ में उन अपरिचित, अद्भुत प्रसंगों का समावेश है जिन्हें आचार्यश्री के सामीप्य में रहने वाले सौभाग्यशाली मुनिगणों, विद्वानों एवं श्रावकों ने प्रत्यक्ष अनुभूत किया है।

विद्वत् विनयांजलि...

अनासक्त साधक एवं संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी जैसे अलौकिक व्यक्तित्व के दर्शन, चरित्र एवं साधना से विद्वत् वर्ग को जो भावानुभूति हुई उसकी अभिव्यक्ति करता ग्रंथ विद्वत् विनयांजली। विद्वत्जनों की क़लम से रचित शब्दों का यह भावभीना प्रकाशन शीघ्र ही आपके हाथों में होगा।

मान को समझने और उसे जीतने में ही मानव की सफलता है।

कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही देश और धर्म की सुरक्षा कर सकता है।

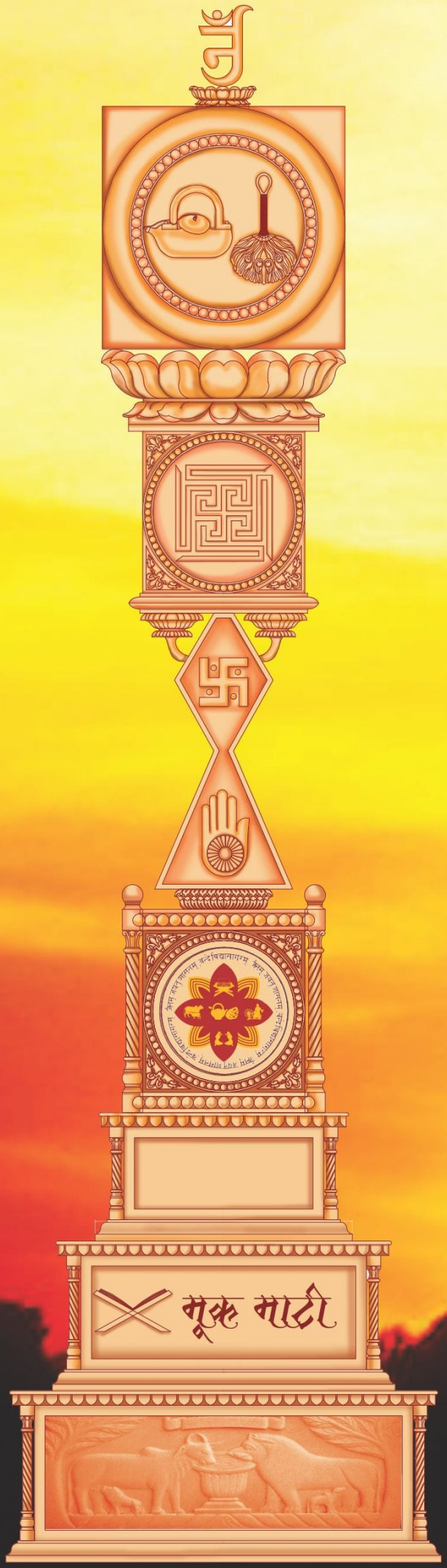

संयम स्वर्ण महोत्सव

2017-18

गौरव अध्यक्ष
अशोक पाटनी
(किशनगढ़)

अध्यक्ष
प्रभात जैन
(मुंबई)

उपाध्यक्ष
विनोद जैन
(बिलासपुर)

कोषाध्यक्ष
राजा भाई
(सूरत)

महामंत्री
पंकज जैन
(दिल्ली)

संपर्क सूत्र

जैन विद्यापीठ
भाग्योदय तीर्थ, करीला, सागर (म.प्र.)
मोबाइल : 91090-90222, 9109090111
ईमेल : jainvidyapeeth@gmail.com

ए-266 सूरजमल विहार
दिल्ली -110092
मोबाइल : 088605-74709
ईमेल : chairman@vidhyashree.in